LITERATURE OF TAMIL, TELUGU, KANNADA & MALAYALAM

Study material

II SEMESTER

B.A HINDI

COMPLEMENTARY COURSE

CU-CBCSS

(2014 Admission)

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Calicut university P.O, Malappuram, Kerala, India 673 635.

1024

UNIVERSITY OF CALICUT
SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Study material

II SEMESTER
B.A HINDI

COMPLEMENTARY COURSE

LITERATURE OF TAMIL, TELUGU, KANNADA & MALAYALAM

Prepared by

DR. N. GIRIJA
ASSOCIATE PROFESSOR OF HINDI
GOVT. ARTS & SCIENCE COLLEGE
KOZHIKODE

Type settings & Lay out
Computer Section, SDE

©
Reserved

विषय सूची

- **Module I**

  Tamil Literature : Tamil stories

- **Module II**

  Telugu Literature : Selected short stories and poems from Telugu Literature

- **Module III**

  Kannada Literature : Kannada stories

- **Module IV**

  Malayalam Literature : Malayalam stories

MODULE I
TAMIL LITERATURE

Tamil Stories

I नागपुष्प

तमिल कहानी 'नागपुष्प' लक्ष्मी कण्णन ने लिखी। इसका हिन्दी रूपान्तर विष्णुप्रिया ने किया है।

रत्ना अपने रूढिग्रस्त परिवारवालों की बातें आंखे मूंदकर विश्वास करनेवाली नही है। बचपन से ही सवाल पर सवाल पूछकर वह उन्हें तंग करती रहती है। त्योहारों के अवसर पर रत्ना केवडे के फूल से अपने बालों को सजाना चाहती थी। उसकी सुगन्ध उसे बहुत भाती थी। लेकिन उसकी इच्छा का इसलिए विरोध हुआ कि केवडे के फूल सांपों को प्रिय है और केवडे के फूल से बाल सजायी एक लडकी को सांप ने डेंस लिया और वह मर गयी। इस प्रकार डराने पर भी वह अपनी इच्छा छोडने को तैयार नहीं थी क्यों कि उसे सांप से भी डर नहीं था। मां से रूढकर वह पेड पर चढ गयी। सांझ होने पर भी, मां की कई बार मिन्नतें करने पर भी वह नीचे नहीं आयी। वह अपने हठ पर अटल रही कि जब तक केवडे से उसका बाल नहीं सजायी जाती तब तक वह वहाँ रहेगी। लेकिन अन्त में मां को परेशान होते देखकर वह उतर आयी।

परिवारवालों ने रत्ना का नाम नागरत्न रखा था। रत्ना को यह नाम पसन्द नहीं था। बार बार विरोध करने पर माँ ने स्कूल में उसका नाम रत्ना लिखा दिया। रत्ना को आश्चर्य हुआ कि नाग से डरनेवाली माँ ने क्यों उसे नागरत्न नाम दिया? अपने इस संदेह का उत्तर उसे तुरन्त ही मिला। नागपंचमी के दिन रत्ना अपनी माँ अहल्या के साथ विशेष पूजा देखने गयी। वहाँ तरह तरह के सांपों की मूर्तियों पर लोगों के द्वारा केवडे और अन्य सुगंधित पुष्प चढाते हुए उसने देखा। उसकी माँ वातावरण को भी भूलकर अतीव श्रद्धा से बार बार नागराज की परिक्रमा कर रही थी। वहाँ खडी औरतों की बातचीत से रत्ना को मालूम हुआ कि एक पुत्र की प्राप्ति के लिए माँ इस प्रकार नाम जाप से परिक्रमा कर रही है। उसे यह भी मालूम हुआ कि पहली बार नागराज ने धोखा देकर एक पुत्री दी। इससे उसका नाम नागरत्न रख दिया था। रत्ना को पहली बार यह मालूम हुआ कि सांप ही बच्चे बनाकर देते

हैं। जिसे लोग डरते हैं, उसकी पूजा वे अधिक करते है। रत्ना को अपनी दादी की याद आयी। वह हमेशा माँ से कहा करती थी कि पुत्र न हुआ तो जन्म सफल नहीं होगा। परिवार के लिए कुलदीपक दिये बिना जीना व्यर्थ है। माँ यह सुनकर अपमानित सा अनुभव करती थी।

शादी के बाद पति के साथ कलकत्ता में रहने लगी तो सांप को लेकर रत्ना की खोज समाप्त हुई। वहाँ उसने पत्थरों में जमे सांप को नहीं, बल्कि वातावरण के अनुकूल रंग-रूप बदलनेवाले घर मकानों में सरकते आये सांप को देखा। ये सांप भारत के कई प्रदेशों में चौरीघर कहे जानेवाले प्रसूती के कमरों में घुस आते थे और जहाँ बच्ची का जन्म होता था, वहाँ बडी चुस्ती से आकर नागरत्ना का टेंटुआ दबाकर उसे मार डालते। नवजात बच्चियों की मुलायम रीढ की हाड्डियों में घुसकर उसे पीछे की ओर मोडने में नाइन की मदद करते। कभी कभी रस्सी से मासूम बच्ची के गले में फांसी बनाकर मार डालते। मुंह में काला दान ठूंस देकर बच्चियों की आत्मा को आज़ाद कर देते थे। स्त्री शिशु हत्या के विरोध करनेवाली माताओं के पतियों के अन्दर घुसकर उन्हें डराते थे। यहाँ अहल्यायें निरन्तर व्रत-उपवास रख्कर पुत्र प्राप्ति की प्रार्थना करती रहती है।

अहल्या की मृत्यु हुई कई साल हो गये थे। अब रत्ना एक शिशु की माँ बन गयी। माँ की याद में वह रोने लगी तो घरवालों ने उसे दिलासा दी कि कितना शुभ है कि उसकी माँ सुहागिन ही चल बसी। इसको मंगलकारी मानकर मन को शान्त कर देने का उपदेश उन्होंने दिया। रत्ना को अपनी निःसहाय, शान्त, सुन्दर माँ की मूर्ति बार बार याद आयी।

प्रस्तुत कहानी में अंधविश्वास और अनाचारों में डूबे भारतीय समाज का यथार्थ चित्र लेख्रिका प्रस्तुत करती है। पुत्र प्राप्ति से जुडे सांप के विश्वास को लेकर आज भी होनेवाली स्त्री शिशु हत्या पर लेख्रिका संकेत करती है। नारी जीवन की असहायता का चित्रण करते हुए इस भयानक वातावरण से मुक्त होने का आह्वान भी परोक्ष रूप में कहानी में हुआ है।

II कहानी:- प्रिय माताजी को

'प्रिय माताजी को' हेमलता कण्णन द्वारा लिखित तमिल कहानी है। एम. सुब्रह्मण्यम ने इसका हिन्दी अनुवाद किया है।

इस कहानी का प्रमुख पात्र है वेदा। वेदा की चार सन्ताने है- कृष्णमूर्ति यानी किच्चा, सारंगन, उषा और श्रीधरन। बडा बेटा किच्चा अमेरिका में अपनी विदेशी पत्नी जानेट और बेटी दिव्या के साथ रहता है। विदेश में होते हुए भी वह माँ को लेकर चिन्तित है और उसकी छोटी सी इच्छाओं की पूर्ति के लिए सदैव उत्सुक रहता है। वह हमेशा ख़त और ड्राफ्ट माँ को भेजता रहता है। माँ अपने दूसरा बेटा सारंगन, उसकी पत्नी गीता और बच्चों के साथ रहती है। गीता सांस को अपने साथ रख़ने में ख़ुश नहीं है। वेदा उस घर में अपने को उपेक्षित और अकेली महसूस करती है।

वेदा विधवा थी। उसके पति सुन्दरराजन की एकाएक मृत्यु हुई थी। बडा बेटा किच्चा के ऊपर पूरे परिवार का भार आ गया। पढते वक्त जो वजीफा मिलता था, उसे बचाकर वह घर भेजता था। नौकरी मिलने पर वह परिवार को संभालने लगा। भाई सारंगन को बैक में नौकरी मिली। लेकिन वह पूरा पैसा घर में ख़र्च करने को तैयार नहीं था। छोटे भाई श्रीधरन की पढाई के लिए भी किच्चा ने सहायता दी। वह जब इंजिनीयर बना तो सारंगन का अनुकरण करके अपना स्वार्थ निभाने लगा।

छत्तीस साल की आयु में किच्चा की शादी जानेट से हुई। उसके बहुत पहले ही दोनों भाइयों की शादी उसने करवायी थी। जानेट अमेरिका की होते ने पर भी भारतीय संस्कृति पर लगाव रख़नेवाली थी। उन्होंने माँ को अमेरिका लिवा लाये। अमेरिका में उन्होंने माँ के लिए उसकी पसन्द की सारी चीज़ें इकट्ठा करके रख़े थे। जानेट के साथ रहकर माँ को लगा कि वह उनके भारतीय बहुओं से ज़्यादा भारतीय है। किच्चा और जानेट आग्रह करते थे कि माँ शेष जीवन उनके साथ अमेरिका रहे। लेकिन वेदा तैयार नहीं हुई। अमेरिका से वापस आकर वेदा सारंगन और श्रीधरन के परिवार के साथ मद्रास और दिल्ली में बारी बारी से रहती थी। लेकिन दोनों भाइयो के लिए माँ गैर जरूरी थी। वेदा को वे भार समझते थे। दोनों बहुओं का माँ के प्रति व्यवहार किच्चा और जानेट अच्छी तरह जानते थे। वे माँ की आशा अभिलाषाओं की पूर्ति करना तथा उसे शान्ति से रहने के उपाय करना चाहते थे।

इसी बीच सारंगन का तबादला श्रीरंगम में हुई तो माँ खुश हो गयी कि वह रोज़ अपने प्रिय मन्दिर जा सकती है। लेकिन पत्नी गीता मद्रास जैसे नगर छोडकर श्रीरंगम जैसे गाँव में जाना नहीं चाहती थी। अतः वह श्रीरंगम जाने को इनकार किया। इतने में किच्चा का पत्र आया। उसमें उसने लिखा कि उसने श्रीरंगम में दो फ्लैट खरीद लिये है। वहाँ स्थापित एक कंपनी के कन्सल्टन्ट बनकर वह वहाँ आने का निश्चय कर चुका है। वे लोग शीघ्र ही वहाँ आकर माँ को लेकर श्रीरंगं जायेंगे। एक फ्लैट में वे रहेंगे और दूसरे में मांजी अपनी मर्जी के अनुसार रह सकेगी। खत पढकर वेदा आनंदित हो गयी।

प्रस्तुत कहानी में समाज में नष्ट होनेवाले महान मूल्यों को उजागर करते हुए लेखक नयी पीढ़ी को याद दिलाते है कि जो माँ बाप उनके लिए जीते है, बुढापे में उनकी खुशियों को भी स्थान देना चाहिए। जहाँ एक ओर गीत जैसी भारतीय नारी इन महान आदर्शों को भूलती है, वहाँ जानेट जैसी विदेशी नारी अपनी सांस की खुशी के लिए पति की इच्छा के अनुसार भारत के गाँव आकर बसने को तैयार होती है और सांस को अपने साथ रखकर उसकी सेवा करना चाहती है। प्रस्तुत कहानी मूल्यों को बनाये रखने की आवश्यकता पर संकेत करती है।

Poems I

उत्सव मनाओ मुक्ति का

'उत्सव मनाओ मुक्ति का' तमिल कविता है। इसका मूल लेखक है सत्यनारायण लावण्य और इसका हिन्दी अनुवाद बालसुब्रह्मण्यम ने किया है। प्रस्तुत कविता में कवि वर्तमान जीवन यथार्थ को अपनी मृत्यु की कल्पना द्वारा प्रस्तुत करते है।

कवि कहते है कि चंद घंटो के अन्दर उनकी मृत्यु हो सकती है। शब्द का निःशब्द होना ही मृत्यु है। अतः निःशब्द होने के पहले वे बेटे को संबोधित करके उनकी मृत्यु के बाद जो कार्य करना है उसको एक एक करके बताते है। वे बताते है कि तकिये के नीचे उनके दाह संस्कार के लिए आवश्यक धन रखा हुआ है। स्पन्दन रुकने से वे शव बनेंगे अतः उनके नासा पुटो को रुई से बंद कर दें और पांव के दोनो अंगूठों को डोरी से बाँध दें। सडकर बास निकलने के पहले ही देह को श्मशान ले जाना। अर्थाट अधिक समय उसके शव का प्रदर्शन न करना। पिता के प्रति पुत्र का परम कर्तव्य है मुख्याग्नि देना। यह धर्म भी बिना किसी शोक से निभाये। पिंड की याचना करते हुए पिशाच या ब्रह्मराक्षस बनकर उनकी आत्मा ज्ञानवापि में न भटकने पडे इसके लिए पिंड दान देना। ऐसा विश्वास मत रखना कि पंखा, दीप, छतरी, गो, भूमि और स्वर्ण का दान देकर उस पिता को स्वर्ग पहुँचा दोगे। क्यों कि मृतदेहों के सहारे जी जीकर बिना किसी दलालो की मदद से ही स्वर्ग में प्रवेश का मार्ग उन्हें पता है। अर्थात् बेटे से उपेक्षित हाने पर निर्जीव से जीनेवाले आदमी को परलोक का रास्ता दिखाने के लिए किसी की जरूरत नहीं। आगे कवि कहते है कि वे फिर से जन्म नहीं लेंगे। क्योंकि इस जन्म में ही उसने काफी कुछ सह लिया है।

कवि बताते है कि वर्तमान अवस्था में मृत्यु सरल और सहज है। मृत्यु को उत्सव के रूप में मनाने योग्य मानते है। अतः बेटे से वे बताते है कि दाह संस्कार के बाद बचे हुए धन से अनाथ-अपाहिजों को, लूले-लंगडो को, अंधे-कोढियों को अन्न दान देकर उनकी मृत्यु का उत्सव मनाना। उसके बाद पूरे घर में डेटोल और रूम स्प्रे छिडकाकर वर्तमान के कोलाहलमय यथार्थ में मस्त रहना।

प्रस्तुत कविता में कवि ने समकालीन जीवन के भयानक यथार्थ का चित्रण सहज, सरल और व्यंग्यात्मक रूप में उपस्थित किया है। वर्तमान संदर्भ में बूढ़े अकेले और उपेक्षित जीवन बिताते है। अतः कवि बताते है कि उन्हें पुनर्जन्म भी नहीं चाहिए। दाह संस्कार के लिए भी वह बेटे की मेहरबानी नहीं चाहता। प्रस्तुत कविता हमारी संस्कृति में आये भयानक परिवर्तन का सही दस्तावेज़ है।

(2) ठाकुर की निर्मात्री

प्रस्तुत कविता तमिल भाषा की है। इसका मूल कवि है मालती मैत्री और इसका हिन्दी अनुवाद श्री. एच. बालसुब्रह्मण्यम ने किया है।

खेलते खेलते ऊब महसूस हुई और सब अपने अपने घर लौट गये तो बिटिया ज़मीन पर बिखरे सारे खिलौनो कार्डबोर्ड के बक्से में करीने से रखने लगी। एकाएक उसके चेहरे का रंग बदल गया। वह मुंह लटकायी माँ के पास आयी और बोली "माँ लगता है किसी ने मेरे ठाकुर को चुरा लिया"। माँ ने समझाया "ठाकुर किसी एक का अपना नहीं है। इसलिए उसकी चोरी होने की बात ही बेमतलब है। अतः अपनी चिकनी मिट्टी से अपने ठाकुर का निर्माण करो या कोरा कागज़ लेकर रेखाओं से अपना ठाकुर बनाओ।" बिटिया ने पूछा "ठाकुर की लंबाई-चौडाई ऊँचाई कितनी रखूँ?" माँ बोली "तेरी मुट्ठी जितनी"। बिटिया अपने ठाकुर को अपने निर्माण के अधीन होकर गूँथने लगी।

इस छोटी सी कविता में माँ बेटी के निष्कलंक संवाद से कवि एक गंभीर सत्य का उद्घटन करते है। ईश्वर की लंबाई चौडाई और ऊँचाई हम जितने मानते है, उतने है, छोटी बच्ची के लिए वह अपनी मुट्ठी भर है। ईश्वर किसी की अपनी संपत्ति नहीं। जैसा हम सोचते है, वैसा ही उनका रूप है। छोटी बच्ची अपनी मुट्ठी भर के ठाकुर का निर्माण करते है और बडे हाथों से बडे ठाकुर का निर्माण संपन्न होता है। लंबाई चौडाई के बावजूद वह सबके अन्दर है, जिसका निर्माण हम खुद कर सकते है।

MODULE II

TELUGU LITERATURE: SELECTED SHORT STORIES AND POEMS FROM TELUGU LITERATURE

तेलगु कहानी

(1) कहानी एक सफ़र की

श्रीरमण की तेलगु कहानी एक पर्यटन के अनुभव के रूप में लिख्री गयी है। इसका हिन्दी रूपान्तर दण्डिमोटला नागेश्वर राव ने किया है।

सिकन्दराबाद से जानेवाली सूपर एक्सप्रेस गाडी की दूसरी श्रेणी के शयनयान डिब्बे में आमने सामने सीटों पर दो दम्पति जोडियाँ बैठी हैं। एक जोडी शहरी लगती है तो दूसरी गंवार। चारों की उम्र साठ के ऊपर हैं। पहली जोडी के हाव-भाव और सामान को देख्कर ऐसा लग रहा है कि वे विदेश यात्रा के बाद वापस घर लौट आ रहे है। ग्रामीण महिला बडे चाव से शहरी महिला की वेष भूषा और हाव भाव को ताक रही है। थोडी ही देर में दोनों परिचित हुई और बाते करने लगीं। परिचित हो जाने पर शहरी महिला कहती है कि उनके दोनों बेटे अमेरिका में सोफ्टवेयर इंजिनीयर हैं और बेटी तथा दामाद शिकागो में। धीरे धीरे शहरी महिला के पति भी बातचीत में भाग लेने लगता है। वह अमेरिका का इतना वर्णन करता है कि अमेरिका भारत से कई गुना अच्छा है। बातचीत सुनकर ग्रामीण महिला के पति जो अपनी धोती कुर्ते में बिल्कुल गंवार लगता था, कहने लगा कि उनकी बेटी अटलांटा में रहती है, दामाद वहाँ सोफ्टवेयर इंजिनीयर है। वह बिलगेट्स की कंपनी में है। हाल ही में दामाद ने एक कार ख्रीदी जिसको चलाने की जरूरत नहीं। फलाँ जगह जाओ कहकर कार्ड दिख्राये तो सारा काम वही देख्र लेती है। वह अंग्रेजी में बोल रहा था। शहरावाले चकीन तक नहीं आया कि गंवार लगनेवाले इस आदमी के मुँह से इतनी सुन्दर अंग्रेज़ी सुनने को मिलेंगे। पति की बातें सुनकर ग्रामीण महिला भी आँख्रें फाडकर उसकी तरफ देख्रती रही।

अगले दिन गाडी मुकाम पर पहुँच गयी। अमेरिकन स्टिकरों से भरा बैग लेकर पहली जोडी ने बिदा ली। दूसरी ने भी अपनी राह पकडी। रास्ते में गाँव की महिला ने अपने पति से पूछा "आप मुझसे बिना बताये अमेरिका कब जाके आये? यही नहीं हमारी तो सन्तान ही नहीं।" पति ने कहा "इन जैसे अमेरिका दीवानों से ऐसी दी बात करनी चाहिए। उनके बेटे अमेरिका में रहते है और इधर हमें सन्तान ही नहीं रहे दोनों बातें एक ही है।" उनके होने और हमारे न होने दोनों बराबर है।

प्रस्तुत कहानी में वर्तमान जीवन के ढोंग, पारवण्ड और दिख्रावे को एक रेलयात्रा के अनुभव के रूप में लेख्रक ने व्यंग्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया है।

(2) सुदामा रिटायर हुए

अंबल्ला जनार्दन की इस तेलुगु कहानी का हिन्दी अनुवाद डॉ.के.वी.नरसिंह राव ने किया है।

घर बैठे बैठे आराम से वेतन पाने की इच्छा से सुदामा ने आठ साल की सेवा बाकी रहते समय बैक मानेजर के पद से वी.आर.एस. लेने का निश्चय किया। वी.आर.एस. से मिलनेवाली रकम बैंक में जमा करके उसके ब्याज और पेंशन पर जीना उसका उद्देश्य था। काम के झंझटों और हर तीन साल में होनेवाले स्थानान्तरण से वह मुक्त होना चाहता था। लेकिन नौकरी से छुडे दूसरे ही दिन परिवारवालों की आँखों में उसका मूल्य घटने लगा। टेलिफोन का बिल भरना, सब्जी खरीदना आदि उसका काम बन गया। पहले गरमागरम खाना परोसनेवाली पत्नी अब बेटे और बहू के लिए सुबह बनाये ठंडा खाना उसे परोसने लगी है। थोडे ही दिन में सुदामा को मालूम हुआ कि वी.आर.एस लेकर उसने बडी गलती की। पद ही आदमी का महत्व है, उसके बिना वह घरवालों की निगाह में नीचा हो जाता है। किसी काम के लिए अपने बैंक में गया तो किसी को उससे बातें करने का वक्त तक नहीं था। आठ साल की सेवा बाकी रहते वी. आर. एस लेने पर पहली बार वह पछताने लगा। रिश्तेदारों से मिलकर आने की इच्छा हुई। लेकिन पत्नी यह बात कहकर टालने लगी कि उसकी अनुपस्थिति में बेटे, बहु और उनके बच्चों का काम कौन संभालेगा? सुदामा को मालूम हुआ अब कुछ दिन कोई काम न करके बैठे तो वह पागल हो जाएगा। अतः उसने अपने परिचित कुछ खातेदारों से मिलकर अपने लायक कोई नौकरी ढूँढने का निश्चय किया। कुछ पैरवी करके उसने एक बडी कंपनी में आर्थिक सलाहकार का काम संभाल लिया। नयी नौकरी में ओहदा तो बडा था। लेकिन क्लर्क से मैनेजर तक का सारा काम उसे स्वयं करना पडा। कल के अधीनस्त कर्मचारी को भी उसे 'सर' कहकर इज्जत के साथ उसे संबोधित करना पडा। उत्पादन की कमी होने पर बैक से कंपनी को ऋण मिलना असंभव था। लेकिन कंपनी का प्रबंध निर्देशक गलत आंकडे दिखाकर नये लोन लेने का दबाव देता रहा। इस प्रकार एक से किया गया न्याय दूसरे के प्रति अन्याय सिद्ध होने लगा। बैंक ने उसे जीवन दिया था, लेकिन यह कंपनी आज उसे वेतन दे रही है। अतः सुदामा दुविधा में पड गया। अन्त में वह इस निर्णय पर पहुँच गया कि स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति को वह स्वैच्छिक सेवा के साथ आगे बढायेगा। उसकी कोलनी के उस पार मजदूरों की झोंपडियाँ थीं। उनके बच्चे स्कूल न जाकर छोटे मोटे काम करते रहते है। उन्हें पढायें तो उनमें से जो तेज़ है, उन्हें निजी तौर पर दसवीं की परीक्षा में बिठाया जा सकता है। उनकी शिक्षा और अनुभव कम से कम कुछ लोगों के लिए ही सही, काम आये। अपनी इस योजना को सफल बनाने के लिए अपने जैसे कुछ वी.आर.एस धारकों की सहायत लेने की उसने सोची। इस सोच से उसका मन हल्का हो गया और वह शान्ति और आराम से नींद में खो गया।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने सुदामा के अवकाश प्राप्त अनुभवों का मनोरंजक वर्णन करते हुए अपने तन मन और धन दूसरों की सेवा में उपयुक्त कराने का महान संदेश भी दिया है।

Poems- I

मेरे देश का भविष्य

मेरे देश का भविष्य तेलगु भाषा की कविता है। इसका मूल कवि है गुंटरू शेषेन्द्र शर्मा और इसका हिन्दी अनुवाद टी. महाडेव राव ने किया है।

प्रस्तुत कविता में कवि भारत के भविष्य के प्रति आकांक्षा व्यक्त करते है। कवि कहते है कि देश के भविष्य को लेकर सभायें और संगोष्ठियाँ चलायी जा रही हैं। देश प्रेम को दिखाने के लिए झंडे फहरा रहे हैं। लेकिन यहाँ पीडितों की कतारों में खडे होकर मानव जीवन आगे बढ रहा है। पीडितों की कतारें दिन ब दिन बढती जा रही हैं। अधिकाधिक लोग रोज़ गरीब और शोषित बनते जा रहे हैं। कवि कहते है कि देश का भविष्य मेरे दरवाज़े पर खटखटा रहा है। देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का काम हर एक नागरिक को करना है। देश हमसे यही उम्मीद करता है।

कवि आगे बता रहे है कि इस देश में मजदूर लोग भोडो की तरह दोपहर की मैदानों में चर रहे हैं। कठिन मेहनत के बावजूद भी गरीबी और शोषण की कडी धूप से उन्हें मुक्ति नहीं। यहाँ समानता किसी पुराने स्वप्न की भान्ति बदल दी गयी है। अर्थात् समानतापूर्ण समाज की आकांक्षा व्यर्थ है। इसका साक्षात्कार अब संभव नहीं। इस देश में कवियों और शब्दों को दीमक लग चुकी है। अर्थात् कवि की वाणी से उत्पन्न प्रेरणा अब समाज में दिखायी नहीं देती। महान ऋषियों के महान संदेश पुस्तकें बनकर ग्रंथालयों में पड गये है। उन क्रान्तिकारी और क्रान्तदर्शी उपदेशों और संदेश का कोई भी मूल्य हमारे समाज में नहीं है।

प्रस्तुत कविता में भारत के भविष्य के प्रति कवि अपनी उत्कंण्ठा और आकांक्षा प्रकट करते है। उनके अनुसार इस देश ने महान व्यक्तियों, महान देश प्रेमियों कई महान दर्शनों तथा विचार धाराओं को जन्म दिया है। लेकिन उन महान मूल्यों को भूलकर आज भारतीय भविष्य की ओर बढ रहे है। कवि देश की स्थिति में उतने आशावादी दिखायी नहीं पडते। भारत के भविष्य को लेकर कवि की निराशा का स्वर संपूर्ण कविता में गूँज उठता है।

Poem-2

मैं

'मैं' तेलगु भाषा की कविता है। इसका मूल लेखक है वरलक्ष्मी और इसका हिन्दी अनुवाद आर. शान्ता सुन्दरी ने किया है। यह आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी कविता है। इसमें कवयित्री नारी जन्म की अभिशप्तता पर संकेत करती है। लेखिका के अनुसार परंरा से पीडित, शोषित तता अस्वतंत्र नारी की स्थिति में अभी तक कोई परिवर्तन आता दिखायी नहीं पडता।

कवयित्री कहती है कि वह माँ के गर्भ से हाड मांस लेकर जन्मी थी। लेकिन आगे बढते समय के साथ छेनी की चोट खा खाकर पत्थर बन गयी। अर्थात् हाड मांस की सजीव बच्ची आगे के विकास में निर्जीव पत्थर जैसी बन जाती है। उस पर बराबर कई प्रकार की चोटें पडती है। जिससे वह पत्थर जैसी निर्जीव बन जाती है। वह आगे कहती है कि पत्थर होने पर भी वह सुन्दर मूर्ति नहीं बन पायी। एक एक चोट से उसके दिल में दरारें पडती गयी। पत्थर के दरारो से पानी बहने पर किसी ने उसको नहीं देखा। अर्थात् उसके आंसु पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। अन्दर विरोध की लावा उफनते है तो पत्थर पिघलने लगता है। अर्थात् निषेध आग की गर्मी में वह बचपन से पिघलने लगी थी। जब वह विरोध करने लगी तो वह माँ बाप के लिए अनचाही सन्तान बन गयी। भाइयों के लिए अनावश्यक बहन बन गयी। उसके अस्तित्व का कोई मूल्य नहीं रह गया। इस प्रकार वह बिलकुल माइनस बन गयी।

अभिशप्त स्त्री जन्म के बारे में कवयित्री आगे कहती है कि जब वह अपनी अस्वतंत्रता पर असहिष्णुता दिखाती है तो तुरन्त उसे छुडाने के लिए हज़ारों की खर्च करनी पडती है। अर्थात् हज़ारों का दहेज देकर ही एक लडकी छुडायी जा सकती है। ससुराल पहुँचने पर वहाँ भी वह सोने की गुडिया नहीं बन पायी, न रत्नों की राशि। अर्थात् काफी दहेज लेकर आने पर भी पति के घर में स्त्री का कोई मुल्य, या स्थान नहीं है। उपेक्षा और अवमानना सहकर भी रोज़ रोज़ चेहरे पर नयी मुस्कान चिपकाकर, तरह तरह के मुखौटे लगाकर, अपने दिमाग होने की बात भी भूलकर, चाबी दी गयी गुडिया के समान ससुरालवालों के सामने चलती फिरती है। इस प्रकार मायके से ससुराल आने पर वह समुद्री लहरों के बीच एक शिला बन जाती है। अनेकानेक समस्याये रुपी लहरों के बीच वह कृत्रिम जीवन जी रही है। असल में वह वध्यशिला पर काटा गया एक सिर बन जाती है। अर्थात् उसका अस्तित्व सिर काटा निर्जीव अस्तित्व है। जन्म देने की वेदना भोगने पर भी जन्मदिन मनाने की खुशी उसके

भाग्य में नहीं है। जन्म देने की वेदना स्त्री भोगती है। लेकिन उसका जन्म दिन कभी कोई मनाता नहीं। अनजाने ही उसका जन्मदिन बीत जाता है। फिर भी कवयित्री कहती है कि कल की आस लिए वह जीवित रहती है। माँ बनने का आनंद पाने की उम्मीद उसके निर्जीव शरीर में प्राण फूंक देता है। आसपास घटनेवाली घटनाओं पर ध्यान देने का मौका उसे नहीं है। तो राजनीति की बात वह कैसे जान सकती है? कहीं 'गल्फ वार' हो रहा है तो उससे उसका क्या वास्ता है? मन में निरन्तर चलनेवाला युद्ध ही उसके लिए ज़्यादा महत्वपूर्ण है। इस प्रकार घर की चहरदीवारी में अपना एक छोटा बौना व्यक्तित्व लेकर बोनसाई की तरह वह जी रही है। निष्कर्ष के रूप में कवयित्री बताती है कि पीढियों की, परंपरा की लहरीली सागर में चिर समाधि में लीन एक शिला की तरह वह जी रही है। अर्थात् परंपरा से उत्पीडित, शोषित, अस्वतंत्र नारी निर्जीव शिला के समान जी रही है। कोई इस पर ध्यान ही नहीं देता कि उसका भी दिल है, दिमाग है।

प्रस्तुत कविता में युग युगों से परिधि पर पडी नारी के प्रताडित जीवन का यथार्थ चित्र प्रतीकात्मक रूप में कवयित्री ने प्रस्तुत किया है।

MODULE III
KANNADA LITERATURE

Kannada Stories

(1) चंपी

चंपी कहानी का मूल लेखक है त्रिवेणी और इस कन्नड कहानी का हिन्दी रूपान्तर श्री. गुरुनाथ जोशी ने किया है।

'चंपी' कहानी चंपी की बडी बहन राजी के कथन के रूप में विकसित होती है। चंपी के जन्म से उसकी दादी और माँ-बाप असन्तुष्ट थे। दो बेटियों के बाद तीसरी लडकी होने पर वे सब निराश हुए। यही नहीं जन्म से ही चंपी का एक हाथ नहीं था। लेकिन सोने की गुडिया जैसी चंपी धीरे धीरे घरवालों की लाडली बन गयी। घर में यदि कोई मेहमान आते तो माँ चंपी के हाथहीन होने के कारण उसे उनकी नज़र से बचाकर रखती। कोई उसे यदि देखते तो वे उस पर सहानुभूति प्रकट करते कि कर्पूर की सी गुडिया को ईश्वर ने एक हाथ ही दिया है।

एक दिन राजी खेल रही थी कि माँ ने उसे पुकारकर उससे बडी बहन विशाली को समाज से बुला लाने को कहा। अंधेरा होनेवाला था, चौदह साल की विशाली अकेली नहीं आ सकती थी। चंपी भी साथ आने के लिए ज़िद करने लगी तो माँ ने उसे भी राजी के साथ जाने दिया। जाते वक्त राजी ने चंपी से कहा कि वह चंपी को समाज के बाहर खडा करके अन्दर जाएगी और विशालू को बुला लायेगी। चंपी सहमत हो गयी। समाज के कांपउण्ड के एक नारियल के पेड के पास चंपी को खडा करके राजी ने नारियल की शाखाओं से ढंक दिया ताकि किसी को दिखाई न दें। सहेली के साथ गप्पें हांकती विशालू को लेकर राजी बाहर आयी। दोनों मिलकर नारियल की हरी शाखा के बीच से उसे उठा लिया। चंपी को इस प्रकार उपेक्षित और अनाथ छोड आने पर विशालू क्रुद्ध हुई और वह चंपी को उठाकर घर चली। घर जाने पर राजी को मालूम हुआ कि चंपी पर किये अत्याचार पर माँ बाप और दादी उससे नाराज़ है। लेकिन तब भी चंपी अपने कोमल बायें हाथ पसारकर 'चंपी आयी' कहती हुई हँसी।

प्रस्तुत कहानी में चंपी के द्वारा लेखक यह बताते है कि लडकी का जन्म आज भी हमारे समाज में अमंगलकारी है। यदि वह अपाहिज है तो घरवाले उसे लोगों से छिपाने की कोशिश करते रहते हैं। कहानी की दादी पहले दुःखी होती है लेकिन बाद में स्थिति संभालती है और दूसरों को हिम्मत देती है। इस छोटी सी कहानी में बाल मनोविज्ञान का भी परिचय हमें मिलता है।

(2) करुणा

एम.वी.सीतारामय्या की इस कन्नड कहानी का हिन्दी रूपान्तर श्री. गुरुनाथ जोशी ने किया है। प्रस्तुत कहानी में लेखक एक कुत्ते के प्रति एक बालक की करुणा का चित्रण करते हुए मानव और जानवर के बीच तथा मानव और मानव के बीच का आत्मीय संबंध व्यक्त करते है।

एक दिन रामू स्कूल से लौटा तो उसके साथ एक कुत्ते का पिल्ला भी था। गली में पडे उस कुत्ते के सिर से खून वह रहा था। रामू ने सहानुभूति से अपने टिफिन कारियर से खाना लेकर कुत्ते को खिलाया। वह स्कूल की ओर चला तो कुत्ता भी उसके पीछे पीछे चला। कुत्ता स्कूल में ही नहीं उसके क्लास में भी उसके साथ आया। घर पहुँचकर सारी बातें रामू ने माँ से बतायी। रामू का वर्णन सुनकर माँ ने उसे कुत्ते को छोड आने को कहा नहीं तो उसे पिताजी से मार खाना पडेगा। रामू को मालूम हुआ कि उसके घर में कुत्ते का स्वागत नहीं होगा। दुःखी होकर वह पडोस के नरसिंगराव के पास गया। सारी कहानी उनसे बतायी। नरसिंगराव जी का कोई बच्चा नहीं था। अतः रामू का उम्मीद था कि वे कुत्ते को पालेंगे। लेकिन रावजी की पत्नी कुत्ते के अपने घर पालने के लिए तैयार नहीं थी। निराश होकर रामू घर लौटा।

रामू के घर में रामू ही सबसे छोटा था। शाम को उसके दो बडे भाई और बहिन स्कूल तथा कालेज से घर आये। रामू के कुत्ते की ओर उन लोगों ने ध्यान ही नहीं दिया। उनकी उपेक्षा देखकर रामू दुःखी हुआ। पिताजी घर आये तो उन्होंने पिल्ले को छोड आने ने को कहा। लेकिन रामू नहीं माना और वह रोने लगा। पिता के आदेशानुसार बडा भाई कुत्ते को बाहर छोडने गया। रामू रोते रोते पीछे भागा। यह दृश्य देखकर नरसिंगरावजी आये और वे पिल्ले को लेकर अपने घर गये।

रामू के पिल्ले का नाम रामू ही पड गया। 'रामू' पुकारने पर दोनो रामू भागकर आते थे। रामू अच्छी नस्ल का सुन्दर कुत्ता था और थोडे ही दिनों में वह सबका प्यारा हो गया। कुत्ते के साथ रामू अधिकांश समय रावजी के घर ही बिताने लगा।

एक दिन रामू के घर के सामने आकर कुत्ता भौंकने लगा। आवाज़ सुनकर रामू बाहर आया। कुत्ता बगल की छोटी गली से पिछवाडे की ओर भागा। रामू ने उसका पीछा किया। कुत्ता एक दरवाज़े के पास खडे होकर लगातार भौंकता रहा। रामू ने दरवाज़ा खोला। कुत्ता बाहर दौडा और गली में कूडे कचरे के पास पडी एक गठरी के पास जाकर सूंघने लगा। गठरी के पास दो चार कौए थे। रामू ने उसे भगाकर पास जाकर देखा। गठरी में बोरे की पट्टी में लपेटे हुए एक शिशु था। रामू दौडकर यह खबर रावजी को दिया। थोडी ही देर में गली के सारे लोग वहाँ इकट्ठे हुए। उस अनाथ शिशु को देखकर वे सहानुभूतिपूर्ण बातें बातें करने लगे। लेकिन कोई भी शिशु के पास नहीं गया। अन्त में रामू शिशु के पास गया और कपडा हटाकर देखा और बताया कि शिशु ज़िन्दा दिखायी पडता है। जब वह बच्चे को छूने लगा तो माँ बाप ने उसे गाली देकर पीछे हटाया। इतने में लोग झाडू लगानेवाली नरसी को बुलाने लगे। अच्छूत नरसी आकर बिना सोच विचार से उस शिशु को उठाकर अपनी गोद में सुला लिया। उसने कहा कि वह सोने का सा शिशु किसी ब्राह्मण का लगता है। अतः अछूत होने के कारण वह कैसे उसे पाल सकती है? लेकिन कोई उस अनाथ शिशु को लेने के लिए आगे नहीं आया तो नरसी उसे लेकर अपने घर चली। कुत्ता भी उसके पीछे पीछे चला। रामू के बुलाने पर भी वह नहीं आया।

माँ के बार बार बुलाने पर भी रामू गली में ही खडा रहा। उसे मालूम हुआ कि झाडू लगानेवाली, मल ढोनेवाली, गन्दे शरीरवाली नरसी का मन निर्मल है, उसमें कूडा कचरा नहीं। इस रामू का प्रतिनिधि होकर रामू नामक कुत्ता नयी माता के पास रहे शिशु के पीछे गया था। अर्थात् रामू की करुणा उस कुत्ते में तब साकार हुआ था।

प्रस्तुत कहानी में लेखक एक लडके के करुणामय हृदय का मार्मिक वर्णन किया है। प्राणि मात्र के प्रति उसकी करुणा बडो के लिए भी अनुकरणीय है।

कन्नड कविता **(1) मोमबत्ती**

मोमबत्ती कन्नड कविता है। इसका मूल लेखक सी. रवीन्द्रनाथ है और डॉ. तिप्पे स्वामी ने इसका हिन्दी अनुवाद किया है।

कवि कहते है कि अंधेरे में जब वह निकला तो रास्ते में मोमबत्ती ने उनसे बात की वह प्रकाश को उधार देगी और एक तीसरी आंख बनेगी। लेकिन एक शर्त है कि यह उधार उसे लौटाना होगा। मोमबत्ती के प्रकाश में चलने लगा तो रास्ता स्पष्ट दिखायी देने लगा। सोचता चला कि प्रकाश कैसे लौटाया जा सकता है। धीरे धीरे मोमबत्ती पिघलने लगी। मोम की बूंदों ने मरते वक्त यह वसीयत लिखी "मेरे प्रकाश को जगत को दो"। अन्त में कवि कहते है कि किसी को प्रकाश देना है तो पहले हमें पिघलना सीखना है।

प्रस्तुत कविता में स्वयं पिघलकर दूसरों को प्रकाश देनेवाली मोमबत्ती के ज़रिये कवि हमें यह सन्देश देते है कि यदि हम दूसरो को प्रकाश देना या खुशी देना चाहते है तो उसके लिए हमें अपना स्वार्थ छोडना है, त्याग करना सीखना है।

(2) किस्मत

किस्मत कविता श्री. सरजू काटकर ने लिखा है और इसको हिन्दी में रूपान्तरित किया है श्री.डी. एन. श्रीनाथ ने।

कवि कहते है अगर मै चेचन्या में पैदा होता तो रूस के सैनिको द्वारा मर ही जाता और इस प्रकार दफनाया जाता कि किसी को पता ही नहीं चलता। अगरवियतनाम में पैदा हुआ तो अमेरिकी बमों से बचना असंभव होता और बंबारो से परिवार सहित तबाह होता। अगर कराची में जन्म लेता तो मुसलमान कहता तो भी शिया सुन्नी लडाई में दोनों मुझे नहीं छोडते। अगर युगांडा में पैदा होता तो किसी भयानक ऐसी बीमारी का शिकार होता जिससे दुनिया भर में इस बीमारी के साथ मेरा बदनामी भी होता। अगर जर्मनी में जन्म लेता तो ज्यू समझकर ज़िन्दा जला देता और हिटलर के सैनिकों के सामने घुटने टेक रोज़ रोज़ खडे होना पडता। अगर अफ्रीका में पैदा होता तो वर्णद्वोष के नाम पर बलि हुआ होता। क्यों कि गोरे मुझे अश्वेत और नीग्रो मुझे गोरा समझ बैठेंगे और केले के समान मुझे छील देते। अगर मै श्रीलंका में जन्म लेता तो मानव बमों से छुटकारा पाते पाते मर ही जाता और मै आसमान में चूर चूर होकर उड जाता। अगर साऊदी अरब में जन्म लेता तो हाथ पैर काट लिये होते कि रास्ते में जाते वक्त मेरा हाथ औरत को छू गया था। अन्त में कवि अपनी किस्मत को बखारते है अच्छी किस्मत होने के कारण मै भारत में पैदा हुआ। आसपास यदि कुछ भी नहीं है तो भी मेरे पास जीव तो बाकी है।

प्रस्तुत कविता में दुनिया भर में व्याप्त हिंसा और अशान्ति की घटनाओं को चित्रित करते हुए अहिंसा की जन्मभूति भारत में जन्म लेने पर कवि अपने को भाग्यवान अनुभव कर रहे है। भारतीय होने के आनंद और गर्व भी परोक्ष रूप में वे प्रकट करते है।

MODULE IV
MALAYALAM LITERATURE

Malayalam Stories

(1) दूर के एक शहर में

इस कहानी का मूल लेखक श्री. इ. हरिकुमार है और इसका हिन्दी अनुवाद श्री.वी.जी.गोपालकृष्णन ने किया है।

सडक दुर्घटना में बुरी तरह धायल एक युवक अस्पताल में मृत्यु का सामना कर रहा है। वह यह नहीं जानता कि एक महीने पहले शादी कर जीवन साथी बनी लडकी जिसके साथ वह हंसी मज़ाक कर बाइक पर सवार कर रहा था, एक पूरा दिन मृत्यु से संघर्ष करके चल बसी है।

दुर्घटना को लेकर नगरपालिका की आपात बैठक चल रही है। जिस पत्थर से यह दुर्घटना हुई, वह वहाँ कैसे आया? इसके जांच-पडताल एक पंच सदस्यीय समिति को सौपा था। वह इस निष्कर्ष पर पहुँच गयी कि इसकी जिम्मेदारी नगरपालिका या अधीनस्त विभाग को नहीं। संशय की छाया बिजली बोर्ड या टेलिफोन विभाग पर पडी है। अतः एक दूसरे आयोग की नियुक्ति करके यह पता लगाये कि इनमें से कौन असली जिम्मेदार है।

जनसंचार माध्यमों ने भी अपनी तरफ से खोज बीन शुरू की। पत्थर के बारे में, उसके उद्‌भव के बारे में, उससे हुई विपत्तियों के बारे में टी.वी. चानलों में लोग लगातार बोलते रहे। एक सेवानिवृत्त स्कूल मास्टर ने यह सत्य बताया कि चार महीने पहले सडक पर तारकोल लगाते वक्त तारकोल का पीपा गरमाने के लिए बनाये चूल्हे के पत्थरों में से एक था वह और उस पत्थर से टकराकर सात दुर्घटनायें अभी तक हुई हैं। लेकिन उत्तेजनाजनक बात न होने के कारण माध्यमों ने उस पर ध्यान नहीं दिया।

बिजली बोर्ड और टेलिफोन विभाग ने नगरपालिका के आरोपों का जोरदार खण्डन किया। दुर्घटना में पडकर अस्पताल में अचल पडे बेटे के सामने बैठकर, पिता ये सारी खबरें अखबारों में पढते रहे। घर में उसकी पत्नी पुत्र की दुर्घटना सुनकर बेहोश पडी थी।

सबूत नगरपालिका के ख़िलाफ थे। विपक्ष ने अपनी पूरी ताकत लगाकर प्रहार किया। सत्ताधारी पक्ष ने हार मानकर वचन दिया कि गाडी के यात्रियों के लिए ख़तरा बना वह पत्थर तुरन्त ही निकाल दिया जाएगा।

लेकिन सडक के बीच गडे हुए पत्थर को निकालने के लिए नियमानुसार निविदा का विज्ञापन देना है। विज्ञापन कंपनी के व्यय सहित ख़र्च तुरन्त ही पास हो गया। बेटे के पलंग पर बैठकर पिता ने विज्ञापन पढा। निविदा प्रपत्र ख़रीदने के लिए जमाव हुआ। प्रपत्र में विस्तार से यह दिख़ाना था कि करनेवाला काम क्या है और उसमें प्रयुक्त यंत्र कौन कौन से है। यही नहीं उनकी गुणवत्ता के संबंध में किसी मान्यता प्राप्त निरीक्षणालय से प्राप्त प्रमाण पत्र की तीन प्रतियाँ, तहसीलदार या उसके ऊपर के किसी अफ्सर से हस्ताक्षर करके प्रस्तुत करना था।

उधर पिता ने अस्पताल के घने वातावरण से बचने के लिए ख़िडकी से बाहर देख़ा। अंधकारपूर्ण गली में दूर कहीं वह शापग्रस्त पत्थर पडा था, जिसके पाँच बस-स्टापों की दूरी पर उसका घर था।

नगरपालिका की बैठक रोज की तरह शोरगुल से युक्त था। निविदा ख़ोलने के बाद एक सप्ताह हो गया। जो बैठक दो बजे शुरू हुई थी, वह रात दस बजने पर भी समाप्त नहीं हुई थी। शाम का तथा रात का ख़ाना, मिनरल वाटर सब प्रथम श्रेणी के एक रस्तरां द्वारा करने के कारण बैठक निरन्तर जारी रही। बारह बजे तक निविदा पर एक निर्णय पर पहुँचे। दो नाम चुने गये। दोनों व्यक्ति सत्ताधारी दल के सभापदो के रिश्तेदार थे। महापालिकाध्यक्ष दुविधा में पड गया। दोनो मित्र बन्धु है। दोनो में से किसे चुनें। अन्त में उसने ऐसा निर्णय लिया कि ठेका पहलेवाले को दें। दूसरे को अगले महीने का एक काम जो रह गया है, उसे देने का वादा करें।

अस्पताल में आये चौदह पन्द्रह दिन हो गये। इस बीच पिता एक बार ही घर गया था। बेटे के दफ्तर से पहले मित्र लोग आया करते थे। अब आनेवाले भी कम थे। डाक्टर ने साफ साफ बताया कि चेतनारहित, वेटिलेटर की मदद से अस्पताल में लिटाने से कोई फायदा नहीं, बेटे का मस्तिष्क पूर्णतया बर्बाद हो गया है।

एक दिन चाय पीते आते वक्त पिता ने कैज्युएल्टी के आगे एक स्ट्रेचर पर एक युवक का रक्त रंजित शरीर देखा। सडक के बीच के काले पत्थर से टकराकर वह बस के नीचे गिरा था और तभी समाप्त हुआ था।

बारहवीं मंजिल के कमरे पर पहुँचने पर पिता ने देखा कि दो नर्सें बेटे के शरीर को साफ कर रही थीं। लेटे लेटे उसके शरीर पर व्रण आ गये थे।

गलियो के पार एक घर में टी.वी. में क्रिकेट देखनेवाले बच्चे खेल समाप्त होने पर बेट और टेनिस की गेंद लेकर बाहर निकले। पत्थर और लकडी के टुकडे उनके स्टंप्स थे। इसकी खोज में मुख्य सडक पर आये। वहाँ कोलतार में जमा पत्थर पडा था। बच्चों ने खडे होकर उस हिला डुलाकर उरवाड लिया। उसे उठाकर पिच में खडा करके खेल शुरू किया।

आठवी दुर्घटना देखनेवाले स्कूल मास्टर ने आधा किलो कोलतार खरीदकर पिघलाया। आसपास के काले पत्थर के टुकडे बटोरकर उन्होंने वह छोटा सा गड्ढा ढक दिया। ऊपर पिघला कोलतार डाल दिया।

पिता बिना सोए कमरे में इधर उधर चलते रहे। नींद ने सप्ताहों पहले ही उसको छोड दिया था। आँखें झपकने पर उस युवक का मृतशरीर याद आता था। कमरे में इस प्रकार ऊबकर बैठने की निरर्थकता उसे पहली बार महसूस हुई। वह बेटे के पलंग के पास आया। छुककर उसके गाल पर चूम लिया, माथा सहलाया। धीरे धीरे जान बनाए रखने के मददगार उपकरणों को एक एक करके निकाल दिये। धंटे ने एक बजाया तो पांव पसारकर वे लेट गये, एक मिनट में सुखद निद्रा में खो गए।

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार वर्तमान जनतंत्र में आम आदमी कैसे शोषित होता जा रहा है इसका सही चित्र प्रस्तुत करते है। जनता की जान और संपत्ति की रक्षा इस व्यवस्था में संभव नहीं। नगरपालिका की करतूतियों के द्वारा भ्रष्टाचार का विकराल रूप इसके प्रस्तुत किया गया है। छोटी मोटी खबरो को उत्तेजनात्मक रूप में चित्रित करके सांप्रदायिक दंगे तक उत्पन्न करानेवाले माध्यमों की रीति भयानक बनती जा रही है। अन्त में निःसहायता से अनचाहे ही बेटे को मारनेवाला पिता असल में वर्तमान व्यवस्था के ज़िन्दा शहीद के रूप में हमारे सामने उपस्थित होता है।

(2) रत्नाकर की औरत

कहानी की लेखिका श्रीमती चन्द्रमती है और इसका हिन्दी रूपान्तर पी. के. राधामणि ने किया है।

'रत्नाकर की औरत' कहानी में रत्नाकर नाम के दो पात्र हैं। एक रत्नाकर दूसरे रत्नाकर का ड्राइवर है। ड्राइवर रत्नाकर की औरत है इन्दुलेखा जो पडोस की अंगन बाडी में झाडू बुहार का काम करती है। इस वक्त वह नमक और मिर्च लगायी मछली पका रही है कि बेटी ने पूछा कि जंगली कैसे कवि बन गया? उत्तर लिखकर उसे कल क्लास में जाना है। जब माँ ने कहा कि उसे मालूम नहीं है तो बेटी ने पूछा कि वह लिजी के घर हो आए? क्योंकि लिजी का पापा मास्टरजी है और व्याध की कहानी ज़रूर जानते होंगे। लेकिन इन्दुलेखा ने उसे संध्या के समय अकेले जाने को मना किया।

इस समय दूसरे रत्नाकर की औरत जिसका नाम प्रवीणा है, रसोई घर में है। उसे परेशान करने के लिए कोई बच्चा नहीं है क्योंकि उसके दोनों बच्चे उटी के बोर्डिंग स्कूल में पढते हैं।

प्रवीणा की रसोई में बावर्चिन शेशन रात में होनेवाली पार्टी की तैयारियों में व्यस्त है। प्रवीणा ने रोशन को आदेश दिया कि जल्दी ही काम खत्म करके घर जाना। ताकि आनेवाले मेहमान उसके सुगठित शरीर को न देखें।

इन्दुलेखा के पति रत्नाकर की चलायी कार पर प्रवीणा का पति रत्नाकर घर पहुँचता है। आते ही पत्नी की वेशभूषा पर असन्तुष्ट होकर उसने बताया कि महत्वपूर्ण मेहमान आ रहे है और उनके सामने अच्छी साडी पहनकर आयें। इतने में पिछवाडे से ड्राइवर रत्नाकर रसोई के दरवाजे तक आया। वहाँ रोशन ने बतरव के रोस्ट का बडा टुकडा देकर उसका स्वागत किया। रत्नाकर ने कहा कि वह उस रात नहीं आयेगा। उसे रेत की तस्करी के लिए जाना है। कार की चाबी सौंपकर वह गया और शराबखाने की क्यू में शामिल हुआ। दो लडकियाँ मोटर साइकल पर शराबखाने के सामने आ पहुँची, क्यू की पर्वाह किये बिना एक लडकी ने सीधे काउण्टर जाकर शराब खरीदी। रत्नाकर ने मन ही मन सोचा कि औरत हो तो ऐसी होनी चाहिए। उसकी पत्नी के समान चेहरे भर कालिख से आती औरतें किस काम की?

जब एक रत्नाकर शराब की बोतल खोलकर मेहमानो को पिला रहा था, तब दूसरा रत्नाकर गाना गाते खुशी से घर लौट रहा था। पिता के आते ही बेटी व्याध का सवाल लेकर दौड आयी। नानी के रामायण से रत्नाकर इतना जान रखा था कि व्याध वात्मीकी ने रामायण लिखा है। लेकिन बेटी को यह जानता था कि अनपढ व्याध कैसे कवि बन गया?

उधर रत्नाकर की पत्नी प्रवीणा मेहमान की कामुक नज़रों को अनदेखा करके खाने की मेज़ पर व्यस्तता दिखा रही थी। तब पति रत्नाकर एक भारी बम्सा उठाकर अन्दर के कमरे में ले जाने में व्यस्त था।

उस समय दूसरा रत्नाकर टिप्पर लारी दौडा रहा था। उसने मन ही मन सोचा कि पैसा मिलने पर पत्नी को एक मैक्सी, रोशन को साडी, बेटी के लिए फ्राक और उसकी कुछ जरूरी चीज़े खरीदेगा। इस विचार से उसने गाडी तेज़ दौडायी। लेकिन यह निश्चित है कि किसी से टकराने के पहले ही रत्नाकर गिरफ्तार हो जाएगा।

प्रवीणा के पति रत्नाकर ने हज़ार रुपयों के नोटो से भरा जो बक्सा अन्दर रखा, उसमें भी गिरफ्तार की बू है। लेकिन वह पकडा जाएगा, इसमें भी सन्देह है। जिस देश में अग्रिम जमानत, कचहरी में धन की प्रभुता आदि बातें असाधारण नहीं, वहाँ अमीर लोगों के द्वारा दो दिन के लिए गिरफ्तार होने का नाटक खेलने में खास कुछ नहीं है। गरीब रत्नाकर पकडा जाएगा और अमीर रत्नाकर पैसे के बल पर बच जाएगा।

इस समय प्रवीणा रत्नाकर पर अपना क्रोध दिखा रही थी कि इस घर में आगे शराबवाली पार्टियों नहीं होंगी। वह बच्चों को बोर्डिंग से ले आएगी ताकि माँ की इज्जत बचाने के लिए घर में कोई तो रहें।

नशे में डूबे रत्नाकर ने इसका विरोध किया कि उसकी मनमानी नहीं चलेगी। वह प्रवीणा और उसकी सन्तानों के लिए यह पाप कर रहा है। प्रवीणा उत्तर देती है कि उसे और उसके सन्तानों को पाप लगे कुछ भी नहीं चाहिए। उसने चेतावनी दी कि वह दिन दूर नहीं है जब रत्नाकर अपने दुष्कर्मों का फल भोगेगा और तब वह या उसकी सन्ताने उसका साथ नहीं देंगी। नशे की अलसाहट में भी रत्नाकर को लगा कि वह कितना अकेला है।

ड्राइवर को गिरफ्तार करके दो पुलीसवाल उसके घर ले आये। एक पुलीस ने उसके घर की जॉच करके मेज़ की दराज से कुछ ढूंढ निकाला। इन्दुलेखा के पूछने पर पुलीस ने

बताया कि वह उसे जेल ले जा रहा है। और वह आगे जेल में तस्करी करेगा। रोनेवाली बेटी को इन्दुलेखा ने चुप कराया। रत्नाकर ने दयनीय आंखों से इन्दुलेखा की ओर देखा कि उन दोनों के लिए उसने तस्करी की। रत्नाकर ने पत्नी से कहा कि जल्दी ही एक अच्छे वकील से बात करना। लेकिन इन्दुलेखा ने कहा कि यह सब उससे नहीं होगा। बेटी के पूछने पर इन्दुलेखा ने बताया कि अपने कर्मों का फल उसे स्वयं भुगतने देना है।

दूसरे दिन प्रवीणा सबेरे बरामदे में अख़बार की प्रतीक्षा में बैठी थी तो इन्दुलेखा अपने घर में बेटी के लिए खाना बनाने लगी। उसने बेटी को उत्साहित करने के लिए कहा कि जल्दी तैयार हुए तो लिजी के पापा से व्याध के कवि बनने की कहानी मालूम करके स्कूल जा सकेगी। बेटी जोश में आयी।

कहानीकार अन्त में बताती है कि कालेज में पढानेवाले लिजी का पापा इन्दुलेखा की बेटी के सवाल का ऐसा उत्तर देगा एक औरत की वजह से, उसकी अपनी औरत की वजह से रत्नाकर वात्मीकी बन गया। इतिहास में तिरस्कृत वह औरत एक जबरदस्त रूपक है।

प्रस्तुत कहानी में एक पौराणीक संदर्भ को लेखिका ने आधुनिक वातावरण में प्रस्तुत किया है। पुरुष सभी अन्याय और अत्याचार करता है और उसको परिवार के वास्ते सिद्ध करता है। लेकिन स्त्री चोरी तस्करी में मिली संपत्ति का भागीदार होना नहीं चाहती। अपनी सन्तानों को भी उस मार्ग से वह रोकना चाहती है। पुरुष आख़िर अकेला हो जाता है। अपनी दार्शनिक उक्तियों से रत्नाकर को कवि बनानेवाली पत्नियाँ चिरकाल से इतिहास में तिरस्कृत एक जबरदस्त रूपक है।

Malayalam Poems

मलयालम कविता

(1) सहस्राब्द चिता-लेखा, कुछ नमूने

इस मलयालम कविता का लेखक है श्री अय्यप्प पणिक्कर और इसका हिन्दी अनुवादक है श्री.बालकृष्णन मय्यन्नूर। एक सहस्राब्द चिता लेखा के चार नमूने कवि हमारे सामने प्रस्तुत करते है।

सभी अच्छाइयो और बुराइयो के साथ एक सहस्राब्द बीतनेवाला है। उसकी चिता जल रही है। इस बीते सहस्राब्द के चार नमूने कवि हमारे सामने प्रस्तुत करते है।

पहले एक सुन्दर स्त्री को वे प्रस्तुत करते है। वह यहाँ आती जाती थी, उसके बाल तेल और फूल लगाकर संवारे गए थे। उसका शरीर सोना और रेशम के कपडों से सुसाज्जित था। उसके चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट दिखायी पडती थी, वह अब यहाँ सो रही है। सुप्त अवस्था में भी वह अपनी मुस्कुराहट चारो ओर बिखेरती है। अर्थात् धन वैभव और आनंद का वह समय बीत रहा है, इस सहस्राब्द की अन्तिम वेला में। कवि बताते है कि उसके सुन्दर सपनों को यहाँ आकर हम न तोडे। अर्थात् उस वैभवपूर्ण समय का सपना हम न तोडे।

दूसरे नमूने के रूप में कवि ऐसे व्यक्ति को प्रतीक बनाते है जो सज धजकर ठाठ बाट से आया था। लेकिन उसकी घमण्ड भरी अवाज़ अब सुनायी नहीं पडती। उसके साथ सज धजकर जो आये थे, वे भी अब गायब हैं। ऊँची ऊँची आवाज़ में भाषण देकर जिसने लाउड स्पीकर को भी तोड डाला, उसकी घमण्ड भरी आवाज़ अब सुनायी नहीं पडती। वह यहाँ चुपचाप पड गया है, मानो अपमानित हो गया है। कवि कहते है कि वह अहां आकर अकेला सोया पडा है।

तीसरे में कवि एक नेता को प्रस्तुत करते है जो जिन्दगी में संस्कृति का पुजारी माना जाता था, सभी क्षेत्रों में अपनी छाप लगाकर मत प्रकट करता था, भाषण देता था, सबकी प्रतिक्रिया व्यक्त करता था। अब वह शान्ति से आनंद से यहाँ सो जाए।

अन्त में कवि बताते है कि काँटो से, कांटेदार पेडो से, पत्थरों से टकराकर अब अच्छी वाणी सुनायी नही पडती। जिन्दगी की पथरीली, कांटेदार राहों में एक सान्ध्यनापूर्ण शब्द सुनायी नहीं पडता। जब यह बात मालूम हुआ तो वह यहाँ आकर लेटा, थोडी देर ऐसी दी बीत जाए।

प्रस्तुत कविता में प्रतीकात्मक रूप में कवि एक सहस्राब्द की अन्तिम समय पर चार विषयों को प्रस्तुत करके यह बताते है कि एक सहस्राब्द के बीत जाने पर उसके साथ कई मूल्य और आदर्श भी पीछे छुड जाते है। उन सबको चैन से सोने देकर हम एक नयी संस्कृति, नये युग के स्वागत की तैयार कर रहे हैं।

II कविता

(2) बम

'बम' विख्यात मलयालम कवि बालचन्द्रन चुल्लिक्काड की कविता है और इसका हिन्दी अनुवाद डॉ.षण्मुख्न ने किया है।

कवि कहते है मुझे अकेले चलने में डर लग रहा है कि कोई चार पाँच अचानक आकर मुझ पर टूट पडे और छलनी कर दें तो, मेरा गला घोंट दें या पसली में छुरा भोंक दें तो। मैं किसी का कातिल नहीं, किसी को सदमा नहीं पहुँचाया, किसी पार्टी का कुली नहीं रहा, फिर भी कोई नवयुग निर्माता बस से नीचे घसीटकर कलेजे को चीर दें तो मै क्या करूँ? कवि आगे कहते है कि इस दुनिया में गलती से मारे जानेवालों का कोई सहारा नहीं होता। पार्टी के भय से कोई गवाही भी नहीं देगा। कवि कोई पार्टी का सदस्य बनने के काबिल हो जाय तो कितना भाग्यवान होता, किसी विशेष जाति का समर्थन पाने में सक्षम होता तो और भी खुश नसीब होता। कोई धर्म उसके पीछे है तो उसे डरने की गुंजाइश नहीं। पूरा जन्म सुरक्षित ही कट जाएगा। किसी नये सिद्धान्त का दलाल बने तो आजीवन खुशहाली होगी। जाली सिक्के के समान दो कौडी का कवि बनकर जीना दूभर होने के कारण कभी भी फूट सकनेवाले बम थैली में रखे भारत के समान मै जी रहा हूँ। किसी भी समय बम का विस्फोट मुझे छलनी कर देगा। अन्त में कवि बताते है कि किसी के द्वारा मारे जाने से बेहतर है आत्महत्या करना।

प्रस्तुत कविता में कवि ने वर्तमान समाज की भयानक स्थिति का चित्रण करते हुए जीवन के हर क्षेत्र में आये मूल्य विघटन पर संकेत किया है। ऐसी व्यवस्था में यदि लिखना है तो कवि को किसी पार्टी, जाति, धर्म था सिद्धान्त का दलाल होना पडता है। आत्माभिमान से जीना यहाँ मुश्किल हो गया है। अतः कवि बताते है कि यहाँ किसी के द्वारा कभी भी मारे जाने के डर से जीने से ज़्यादा अच्छा है आत्मसम्मान के साथ आत्महत्या करना।

(3) तिरस्कार

श्री. के. जी. शंकरपिल्लै की इस कविता का अनुवाद डॉ. ए. अरविन्दाक्षन ने किया है।

एक बार एक महर्षि ने एक चूज़े और एक कौए के बच्चे को पास बुलाकर कहा तेरा पंख ज्ञान है। जब तक पंक्के न हो, अंधेर भरी झीलों, गुलेल सी आंखोंवाले बाज़ार के ऊपर, बन्दूक सी आंखोंवाले शहरों के ऊपर उडना नहीं।

छोटी मुर्गी यह सुनकर कटहल के पेड की छाया में दाना बीनती रही, इस निश्चय से कि समझदार होने के बाद उडना बेहतर होगा। लेकिन कौए का बच्चा यह कहकर उड चला कि महर्षि का हर शब्द ताबूत जैसा है। इस प्रकार वह फलो की नयी वादियों की ओर, सडती जूठन की ओर, चबूतरे पर रखे श्राद्ध की ओर, बारिश, धूप सबको झेलकर बाण के लक्ष्य के साथ बराबर उडता रहा। इस यात्रा में वह मोर से, कोयल से और हंस से पराजित तो हुआ लेकिन जनतंत्र में जीतकर अधिकार में आस्थावान होकर अपने कालेपन में बढते हुए वह एक बडा कौआ बन गया।

मुर्गी इस बीच कटहल की छाया तले जवान और खुबसूरत हो गयी। घर के व्याकरण में वह मस्त रही। यादों, सपनो और बेबसियों को वह बीनती रही। पढे-लिखे परिपक्व

अक्लमन्दी की भूख से जो आए उन्होंने उसे पकड लिया। उसकी ख़ुबसूरती को उतार फेंककर उन्होंने उसे ख़ा लिया।

प्रस्तुत कविता में मुर्गी उस पुरानी पंरपरा का प्रतीक है जो अपने सुरक्षित दायरे में यादों, सपनों और बेबसियों को बीनती रहती है। कौआ नयी उभरी संस्कृति का प्रतीक है जो तथाकाथित महान परंपरा को नकारते हुए उत्तरोत्तर आगे बढती है, अधिकार में आस्थावान होकर सब कुछ हासिल करता है और नये ज्ञान और विवेक के बल पर पुराने आदर्शो को ख़ा लेता है। महर्षि के वचनों को ताबूत मानकर उडनेवाला कौआ विशाल दुनिया में पहुँच जाता है और अपने कालेपन से धरती और आकाश पर अधिकार जमाता है तथा मुर्गी की ख़ुबसूरती को अपने पैरो तले रौंद देता है यही नहीं इस नयी संस्कृति में हाशिये पर रखे गये वर्ग अपनी मेहनत और संघर्ष से केन्द्र में आ गया है इसका भी संकेत कविता में मिलता है।

(4) भागवत

'भागवत' विजयलक्ष्मी की छोटी सी कविता है जिसका हिन्दी अनुवाद विनोद बाबू ने किया है।

सांझ को नहा-धोकर सभी परेशानियों से दूर आराम से पति पढ रहे है- भागवत। वे पत्नी को पास आकर बैठने को बुलाता है। पत्नी सोचती है कि उसके लिए रसोई में पकाई के कितने काम बकाए पडे हैं कितने बर्तन मांजने रह गये हैं। कल के लिए कितने छोटे मोटे काम बाकी है। कालिख़ से पुते हाथों से आमरण अन्तहीन महाभागवत आलस के बिना वह पलटकर पढ रही है। वह पूछती है क्या आप पधारेंगे सुनने के लिए? कविता का अन्त एक गंभीर प्रश्न के साथ समाप्त होता है।

प्रस्तुत कविता में थोडी ही पंक्तियों में कवयित्री नारी जीवन का यथार्थ पाठकों में सामने प्रस्तुत करती है। कविता का पुरुष जब नहा धोकर आराम से भागवत पढता है तो नारी अन्तहीन घरेलू कामो में उलझी पडी है। व्यंग्यात्मक रूप में कवयित्री कहती है कि नारी का जीवन अन्तहीन भागवत है जिसको सुनने का कान किसी पुरुष को नहीं।

(5) प्रकृति के सबक

टी.पी राजीवन की इस मलयालम कविता का अनुवाद श्री.प्रमोद कोव्वप्रत्त ने किया है।

कवि कहते है नदियों के बारे में संविधान में कोई जिक्र नहीं है। इसलिए किसी भी तरह हम उसे मार सकेंगे। जिनकी अनजान गहराई है जो काबू में नहीं रहते, इस कारण हम उसे दण्ड दे सकते है। पेडों के लिए किसी भी देश में नागरिकता नही है, इसलिए नागरिक न होने के कारण पर, धरती का दूसरा हिस्सा तलाशने की वजह से, सूरज की ओर प्रयाण करने

का इलजाम लगाकर हम उसे उरवाड सकेंगे। सबसे बडे मरुस्थल का नाम, घंटे में अंधेरे का वेग आदि न जानने के कारण हम किसी भी तालाब को परीक्षा में हरा सकेंगे। बादशाहों को देखते समय उठ खडे होकर सलामी न दे सकने के कारण हम पहाडों को गुलाम बना सकते है। प्रपात कभी नियमों की पाबन्दियों को नहीं मानते, इसलिए जब भी चाहे निन्दा कर सकेंगे। वे असल में कमज़ोरी को ताकत बनाकर खुद खतरे में कूदनेवाले है। कुलिश, हवा, बारिश इनके दल या नेतागण नही है। अतः हम उनके सामने सदा के लिए किवाड बन्द करके उन्हें बाहर छोड सकेंगे। लेकिन वे अचानक आकर हमें चौकाने की शक्ति रखनेवाले हैं।

प्रस्तुत कविता में प्रकृति की अपार शक्ति और उस शक्ति को अपनी काबू रखने की कोशिश करनेवाले मनुष्य की निःसारता पर कवि संकेत करते है। मनुष्य प्राकृतिक शाक्तियों की तुलना में अपने को शाक्ति और बुद्धि संपन्न होने का दावा करता है। सब कुछ समझकर मौन साधनेवाला तालाब, आसमान का अर्थ समझनेवाला पहाड, सबके सब अपनी गहराइयों तथा ऊँचाइयों पर दंभ दिखानेवाले नहीं है। प्राकृतिक शक्तियों पर हावी होने की मनुष्य की मूर्खता पर कवि ने इस कविता में व्यंग्य किया है।

(6) भूल

'भूल' रफीक अहमद की कविता है जिसका हिन्दी अनुवाद पी. प्रणीता ने किया है। प्रस्तुत कविता में कवि नारी जीवन की असहायता को थोडी पंक्तियों में उकेरते है।

हमेशा की तरह कुछ भूल गयी है। रोज़ की गाडी छूटने पर सडक के किनारे घबराकर हाँफते खडे होते तो मन में अनागिनत बेचैनियों की काली गडियाँ छुक-छुककर चली जाती है उनके एक एक झरोरवे में एक एक भूल दिखायी पडती है। वह सोचती है आज क्या भूल गया है? गैस सिलेंडर बन्द करना? बाहर का ताला लगाना? पंखा बंद करना? मुन्ने का गृह-कार्य? नाक पर गुस्सा रखनेवाले पति को 'बार' में भूल रखने का रूमाल? उसे लगता है कि अवश्य ही वह कुछ भूल गयी है। अफीस से जल्दी निकलते हुए भी वह सोचती है कि फाइल में, रजिस्टर के हस्ताक्षर कालम में, गली के किराने की देहरी पर वह कुछ भूल गयी? असल में वह अपने सिवा कुछ भी भूलती नहीं।

प्रस्तुत कविता में बिंबों के सहारे कवि ने नारी जीवन की बेबसी का सही चित्र प्रस्तुत किया है। इसमें चित्रित नारी नौकरी करनेवाली है। घर बाहर के व्यस्त जीवन में उसे अपने लिए एक पल भी नहीं है। उसका कुछ निजी क्षण नहीं है। पति को 'बार' में भूल रखने का रूमाल तक उसे याद करना है। इन सबको याद करते वह अपने को भूल जाती है। औसत नारी का जीवन आज भी दूसरों के लिए है, अपने लिए नहीं।

(7) इन्टीरियर डेकरेशन

गीता हिरण्यन की इस मलयालम कविता का हिन्दी रूपान्तर शैलजा के द्वारा संपन्न हुआ है। प्रस्तुत कविता में कवयित्री पुरुषाधिकार की सामाजिक व्यवस्था में बौना बोनसाई बनायी जानेवाली नारी अस्मिता का विडंबनापूर्ण चित्र प्रस्तुत करती है।

कवयित्री कहती है जमाव और फैलाव नियत किये गये एक बौने पीपल के समान मेरा प्यार और सहज विकास रोका गया। लेकिन ज़मीन की ओर लटकती जडों में, पत्तों और डालियों में सहज वंश धर्म झलकता है। पुरुष समाज से वह कहती है डरो मत, बिलकुल नहीं पनपेगा। सपनों के अतल की ओर ये जडें कभी जाल नहीं फेंकेंगी। क्योंकि सदाचार की नुकीली छुरी मूसला को बारबार काटेगी। रोज़ टहनियाँ तराशने से वासना या रति तेरे तन के सुख की ओर कभी नहीं छा जाएगी। निश्चित तापमान में बैठक के चमत्कार पेड के समान रखे जाने के कारण जीवन की ऋतुओं से भी मैं अनजान हूँ। शिकायत के हिम, विरह की वर्षा इन्कार की धूप जैसे मन के सारे ऋतु भावों को तुमने उतार चढाव रहित स्थिर कर दिया है। अब वसन्त, सावन, पतझड, ग्रीष्म सब मेरे लिए बराबर है। फिर भी मेरा प्यार अन्दर से मज़बूत पेड के समान है। दिल को झकझोरनेवाले हवाहीन, छायाहीन, बे-गान अपुष्पित एक नन्हा पेड है। इस पेड की नन्ही डालियाँ एक प्यारी चिडिया को आ बसने की कामना करती है। इसकी जलती जडें सुदूर जंगल में धूप, वर्षा, हिम और पैतृक गरिमाओं की गृहातुरता चाहती है। अन्त में कवयित्री कहती है आखिर मैं एक पेड ही हूँ। तुझे चाहनेवाला एक लालायित सदाचारी पेड, समस्याओं से थकते ऊबते वक्त एक पल तुम्हारे मन बहलाने का उपकरण एक अलंकरण वृक्ष। असल में सहज विकास से वंचित एक बौना पीपल का वृक्ष।

प्रस्तुत कविता में बौने पीपल को प्रतीक बनाकर कवयित्री नारी जीवन की अस्वतंत्रता, निर्जीवता तथा यांत्रीकता को व्यक्त करती है। सारी क्षमताओं और संभावनाओं से मुक्त नारी को पुरुष बौना पीपल बनाकर उसकी सहज वासनाओं और सहज विकास को रोकता है। यह बौना पीपल अपने अन्दर एक पूरे पेड की सारी संभावनाओं का वहन करता है। लेकिन उसका विकास पुरुष के मन बहलाव तक सीमित रहता है। नारी उत्थान के कई कदमों के बावजूद भी नारी जीवन की निःसहायता का चित्र प्रस्तुत कविता पाठकों के सामने रखती है।